६. पाप के चार हथियार

– कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

लेखक परिचय : कन्हैयालाल मिश्र जी का जन्म २६ सितंबर १९०६ को उत्तर प्रदेश के देवबंद गाँव में हुआ । आप हिंदी के कथाकार, निबंधकार, पत्रकार तथा स्वतंत्रता सेनानी थे । आपने पत्रकारिता में स्वतंत्रता के स्वर को ऊँचा उठाया । आपके निबंध भारतीय चिंतनधारा को प्रकट करते हैं । आपका संपूर्ण साहित्य मूलत: सामाजिक सरोकारों का शब्दांकन है । आपने साहित्य और पत्रकारिता को व्यक्ति और समाज के साथ जोड़ने का प्रयास किया है । आप भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' सम्मान से विभूषित हैं । आपकी भाषा सहज-सरल और मुहावरेदार है जो कथ्य को दृश्यमान और सजीव बना देती है । तत्सम शब्दों का प्रयोग भारतीय चिंतन-मनन को अधिक प्रभावशाली बनाता है । आपका निधन १९९५ में हुआ ।

प्रमुख कृतियाँ : 'धरती के फूल' (कहानी संग्रह), 'जिंदगी मुस्कुराई', 'बाजे पायलिया के घुँघरू', 'जिंदगी लहलहाई', 'महके आँगन-चहके द्वार' (निबंध संग्रह), 'दीप जले, शंख बजे', 'माटी हो गई सोना' (संस्मरण एवं रेखाचित्र) आदि ।

विधा परिचय : निबंध का अर्थ है – विचारों को भाषा में व्यवस्थित रूप से बाँधना । हिंदी साहित्यशास्त्र में निबंध को गद्य की कसौटी माना गया है । निबंध विधा में जो पारंगत है वह गद्य की अन्य विधाओं में सहजता से लिख सकता है । निबंध विधा में वैचारिकता का अधिक महत्त्व होता है तथा विषय को प्रखरता से पाठकों के सम्मुख रखने की सामर्थ्य होती है ।

पाठ परिचय : प्रत्येक युग में विचारकों, दार्शनिकों, संतों-महापुरुषों ने पाप, अपराध, दुष्कर्मों से मानवजाति को मुक्ति दिलाने का प्रयास किया परंतु विडंबना यह है कि आज भी विश्व में अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार, पाप और दुष्कर्मों का बोलबाला है और मनुष्य जाने-अनजाने इन्हीं का समर्थक बना हुआ है । समाज संतों-महापुरुषों की जयंतियाँ मनाता है, जय-जयकार करता है, उनके स्मारकों का निर्माण करवाता है परंतु उनके विचारों को आचरण में नहीं उतारता । ऐसा क्यों होता है? लेखक ने अपने चिंतन के आधार पर इस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास प्रस्तुत निबंध में किया है ।

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ का एक पैराग्राफ मैंने पढ़ा है । वह उनके अपने ही संबंध में है : ''मैं खुली सड़क पर कोड़े खाने से इसलिए बच जाता हूँ कि लोग मेरी बातों को दिल्लगी समझकर उड़ा देते हैं । बात यूँ है कि मेरे एक शब्द पर भी वे गौर करें, तो समाज का ढाँचा डगमगा उठे ।

''वे मुझे बर्दाश्त नहीं कर सकते, यदि मुझपर हँसें नहीं । मेरी मानसिक और नैतिक महत्ता लोगों के लिए असहनीय है । उन्हें उबाने वाली खूबियों का पुंज लोगों के गले के नीचे कैसे उतरे? इसलिए मेरे नागरिक बंधु या तो कान पर उँगली रख लेते हैं या बेवकूफी से भरी हँसी के अंबार के नीचे ढँक देते हैं मेरी बात ।'' शॉ के इन शब्दों में अहंकार की पैनी धार है, यह कहकर हम इन शब्दों की उपेक्षा नहीं कर सकते क्योंकि इनमें संसार का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण सत्य कह दिया गया है ।

संसार में पाप है, जीवन में दोष, व्यवस्था में अन्याय है, व्यवहार में अत्याचार... और इस तरह समाज पीड़ित और पीड़क वर्गों में बँट गया है । सुधारक आते हैं, जीवन की इन विडंबनाओं पर घनघोर चोट करते हैं । विडंबनाएँ टूटती-बिखरती नजर आती हैं पर हम देखते हैं कि सुधारक चले जाते हैं और विडंबनाएँ अपना काम करती रहती हैं ।

आखिर इसका रहस्य क्या है कि संसार में इतने महान पुरुष, सुधारक, तीर्थंकर, अवतार, संत और पैगंबर आ चुके पर यह संसार अभी तक वैसा-का-वैसा ही चल रहा है । इसे वे क्यों नहीं बदल पाए? दूसरे शब्दों में जीवन के पापों और विडंबनाओं के पास वह कौन-सी शक्ति है जिससे वे सुधारकों के इन शक्तिशाली आक्रमणों को झेल जाते हैं और टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर नहीं जाते?

शॉ ने इसका उत्तर दिया है कि मुझपर हँसकर और इस रूप में मेरी उपेक्षा करके वे मुझे सह लेते हैं । यह मुहावरे की भाषा में सिर झुकाकर लहर को ऊपर से उतार देना है ।

शॉ की बात सच है पर यह सच्चाई एकांगी है । सत्य इतना ही नहीं है । पाप के पास चार शस्त्र हैं, जिनसे वह सुधारक के सत्य को जीतता या कम-से-कम असफल करता है । मैंने जीवन का जो थोड़ा-बहुत अध्ययन किया है, उसके अनुसार पाप के ये चार शस्त्र इस प्रकार हैं :-

उपेक्षा, निंदा, हत्या और श्रद्धा ।

सुधारक पापों के विरुद्ध विद्रोह का झंडा बुलंद करता है तो पाप और उसका प्रतिनिधि पापी समाज उसकी उपेक्षा करता है, उसकी ओर ध्यान नहीं देता और कभी-कभी कुछ सुन भी लेता है तो सुनकर हँस देता है जैसे वह किसी पागल की बड़बड़ हो, प्रलाप हो। इन क्षणों में पाप का नारा होता है, ''अरे, छोड़ो इसे और अपना काम करो।''

सुधारक का सत्य उपेक्षा की इस रगड़ से कुछ तेज होता जाता है, उसके स्वर अब पहले से कुछ पैने हो जाते हैं और कुछ ऊँचे भी।

अब समाज का पाप विवश हो जाता है कि वह सुधारक की बात सुने। वह सुनता है और उसपर निंदा की बौछारें फेंकने लगता है। सुधारक, सत्य और समाज के पाप के बीच यह गालियों की दीवार खड़ी करने का प्रयत्न है। जीवन अनुभवों का साक्षी है कि सुधारक के जो जितना समीप है, वह उसका उतना ही बड़ा निंदक होता है। यही कारण है कि सुधारकों को प्राय: क्षेत्र बदलने पड़े हैं।

इन क्षणों में पाप का नारा होता है : ''अजी बेवकूफ है, लोगों को बेवकूफ बनाना चाहता है।''

सुधारक का सत्य निंदा की इस रगड़ से और भी प्रखर हो जाता है। अब उसकी धार चोट ही नहीं करती, काटती भी है। पाप के लिए यह चोट धीरे-धीरे असह्य हो उठती है और वह बौखला उठता है। अब वह अपने सबसे तेज शस्त्र को हाथ में लेता है। यह शस्त्र है हत्या।

सुकरात के लिए यह जहर का प्याला है, तो ईसा के लिए सूली, दयानंद के लिए यह पिसा काँच है। इन क्षणों में पाप का नारा होता है, ''ओह, मैं तुम्हें खिलौना समझता रहा और तुम साँप निकले। पर मैं साँप को जीता नहीं छोड़ूँगा - पीस डालूँगा।''

सुधारक का सत्य हत्या के इस घर्षण से प्रचंड हो उठता है। शहादत उसे ऐसी धार देती है कि सुधारक के जीवन में उसे जो शक्ति प्राप्त न थी, अब वह हो जाती है। सूर्यों का ताप और प्रकाश उसमें समा जाता है, बिजलियों की कड़क और तूफानों का वेग भी।

पाप काँपता है और अब उसे लगता है कि इस वेग में वह पिस जाएगा - बिखर जाएगा। तब पाप अपना ब्रह्मास्त्र तोलता है और तोलकर सत्य पर फेंकता है। यह ब्रह्मास्त्र है - श्रद्धा।

इन क्षणों में पाप का नारा होता है - ''सत्य की जय ! सुधारक की जय !''

अब वह सुधारक की करने लगता है चरणवंदना और उसके सत्य की महिमा का गान और बखान।

सुधारक होता है करुणाशील और उसका सत्य सरल विश्वासी। वह पहले चौंकता है, फिर कोमल पड़ जाता है और तब उसका वेग बन जाता है शांत और वातावरण में छा जाती है सुकुमारता।

पाप अभी तक सुधारक और सत्य के जो स्तोत्र पढ़ता जा रहा था, उनका करता है यूँ उपसंहार ''सुधारक महान है, वह लोकोत्तर है, मानव नहीं, वह तो भगवान है, तीर्थंकर है, अवतार है, पैगंबर है, संत है। उसकी वाणी में जो सत्य है, वह स्वर्ग का अमृत है। वह हमारा वंदनीय है, स्मरणीय है, पर हम पृथ्वी के साधारण मनुष्यों के लिए वैसा बनना असंभव है, उस सत्य को जीवन में उतारना हमारा आदर्श है, पर आदर्श को कब, कहाँ, कौन पा सकता है?'' और इसके बाद उसका नारा हो जाता है, ''महाप्रभु सुधारक वंदनीय है, उसका सत्य महान है, वह लोकोत्तर है।''

यह नारा ऊँचा उठता रहता है, अधिक-से-अधिक दूर तक उसकी गूँज फैलती रहती है, लोग उसमें शामिल होते रहते हैं। पर अब सबका ध्यान सुधारक में नहीं; उसकी

लोकोत्तरता में समाया रहता है, सुधारक के सत्य में नहीं, उसके सूक्ष्म-से-सूक्ष्म अर्थों और फलितार्थों के करने में जुटा रहता है ।

अब सुधारक के बनने लगते हैं स्मारक और मंदिर और उसके सत्य के ग्रंथ और भाष्य । बस यहीं सुधारक और उसके सत्य की पराजय पूरी तरह हो जाती है ।

पाप का यह ब्रह्मास्त्र अतीत में अजेय रहा है और वर्तमान में भी अजेय है । कौन कह सकता है कि भविष्य में कभी कोई इसकी अजेयता को खंडित कर सकेगा या नहीं ?

('बाजे पायलिया के घुँघरू' निबंध संग्रह से)

— o —

शब्दार्थ

खूबियों का पुंज = विशेषताओं का गुच्छा
पीड़क = पीड़ा पहुँचाने वाला
एकांगी = एक पक्षीय
पैने = तीखे/धारदार
बखान = वर्णन
लोकोत्तर = सामान्य लोगों से ऊपर/विशिष्ट
अजेय = जिसे जीता न जा सके
अंबार = ढेर
विडंबना = उपहास
प्रलाप = निरर्थक बात, बकवास
शहादत = बलिदान
उपसंहार = सार, निष्कर्ष
फलितार्थ = सारांश/निचोड़/तात्पर्य
खंडित = भग्न, टूटा हुआ

मुहावरे

ढाँचा डगमगा उठना = आधार हिल उठना
लहर को ऊपर से उतार देना = सिर झुकाकर संकट को गुजरने देना
गले के नीचे उतरना = स्वीकार होना
विवश होना = लाचार होना

टिप्पणियाँ

- **जॉर्ज बर्नार्ड शॉ :** आपका जन्म २६ जुलाई १८५६ को आयर्लंड में हुआ । आपको साहित्य का नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ है । शॉ महान नाटककार, कुशल राजनीतिज्ञ तथा समीक्षक रह चुके हैं । पिग्मैलियन, डॉक्टर्स डाइलेमा, मॅन एंड सुपरमैन, सीझर अँड क्लियोपैट्रा आपके प्रसिद्ध नाटक हैं ।
- **तीर्थंकर :** जैन धर्मियों के २४ उपास्य मुनि ।
- **सुकरात (सॉक्रेटिस) :** यूनानी दार्शनिक सुकरात का जन्म ढाई हजार वर्ष पहले एथेन्स में हुआ । युवकों से संवाद स्थापित कर उन्हें सोचने की दिशा में प्रवृत्त करते थे । आप प्रसिद्ध विचारक प्लेटो के गुरु थे ।
- **दयानंद :** आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती समाजसुधारक के रूप में जाने जाते हैं । आपको योगशास्त्र तथा वैद्यकशास्त्र का भी ज्ञान था ।
- **ब्रह्मास्त्र :** पुराणों के अनुसार एक प्रकार का अमोघ अस्त्र जो मंत्र द्वारा चलाया जाता था ।

स्वाध्याय

आकलन

१. (अ) कृति पूर्ण कीजिए :

(१) पाप के चार हथियार ये हैं – (१)

(२)

(३)

(४)

(२) जॉर्ज बर्नार्ड शॉ का कथन – .....

.....

.....

शब्द संपदा

२. शब्दसमूह के लिए एक शब्द लिखिए :

(१) जिसे व्यवस्थित न गढ़ा गया हो – .....

(२) निंदा करने वाला – .....

(३) देश के लिए प्राणों का बलिदान देने वाला – .....

(४) जो जीता नहीं जाता – .....

अभिव्यक्ति

३. (अ) 'समाज सुधारक समाज में व्याप्त बुराइयों को पूर्णत: समाप्त करने में विफल रहे', इस कथन पर अपना मत प्रकट कीजिए।

(आ) 'लोगों के सक्रिय सहभाग से ही समाज सुधारक का कार्य सफल हो सकता है', इस विषय पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

पाठ पर आधारित लघूत्तरी प्रश्न

४. (अ) 'पाप के चार हथियार' पाठ का संदेश लिखिए ।

(आ) 'पाप के चार हथियार' निबंध का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।

साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान

५. (अ) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' जी के निबंध संग्रहों के नाम लिखिए –

.....

(आ) लेखक कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' जी की भाषाशैली –

.....

६. रचना के आधार पर निम्न वाक्यों के भेद पहचानिए :

(१) संयोग से तभी उन्हें कहीं से तीन सौ रुपये मिल गए ।

.....

(२) यह वह समय था जब भारत में अकबर की तूती बोलती थी ।

.....

(३) सुधारक होता है करुणाशील और उसका सत्य सरल विश्वासी ।

.....

(४) फिर भी सावधानी तो अपेक्षित है ही ।

.....

(५) यह तस्वीर नि:संदेह भयावह है लेकिन इसे किसी भी तरह अतिरंजित नहीं कहा जाना चाहिए ।

.....

(६) आप यहीं प्रतीक्षा कीजिए ।

.....

(७) निराला जी हमें उस कक्ष में ले गए जो उनकी कठोर साहित्य साधना का मूक साक्षी रहा है ।

.....

(८) लोगों ने देखा और हैरान रह गए ।

.....

(९) सामने एक बोर्ड लगा था जिस पर अंग्रेजी में लिखा था ।

.....

(१०) ओजोन एक गैस है जो ऑक्सीजन के तीन परमाणुओं से मिलकर बनी होती है ।

.....